वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

अप्रैल - 2017

* स्वर्ग में नर्क
* भगवान् देवात्मा का पुजारी कौन हो सकता है?
* मुझ अति अदना और तुच्छ पर महा उपकार
* सराहना या खुशामद
* कल्याण सत्संग
* भाव प्रकाश

शेष पृष्ठ 20 का बाकी

करता है, मुझे सुधारता है। बेटा घर लेट आता है, बड़ा दुख होता है, शराब पीता है, उससे बहुत दुखी होता हूं। आप सब ऐसी कामना करो कि मेरा बेटा इस रक्षाकारी संगत के साथ जुड़ जाए।

डाक्टर मुन्शा सिंह जी (पदमपुर) : माता पिता के एहसान मैं किसी प्रकार भी बता नहीं सकता। अब उनके भले के निमित्त कुछ करना चाहता हूं। इस निमित्त मैं हर वर्ष 20,000 रूपये दिया फरूंगा, जो कोई हितकर पुस्तक छापने में खर्च हो।

श्रीमान जागीर सिंह जी (केसूपुरा सिरसा) इस स्थान पर आकर बहुत लाभ हुआ है। मैं सभाओं में वा यहां आने से पहले प्रार्थना करता रहा हूं कि मेरी सहायता हो। मुझे रोशनी मिले, मेरा भला हो। सभाओं में माता पिता, डाक्टरों, श्रीमान जी वा अन्य कर्मचारियों और उपकारियों के उपकार नज़र आते रहे और उनके आगे झुकाते रहे। मुझे नीच घृणा वाली सभा से बहुत लाभ हुआ है। बच्चों को, श्रीमती जी को, पशुओं को, और कई जन सामने आए है कि किस किस प्रकार सताया है, दुखी करता रहा हूं। यह सब याद करके रोता रहा हूं। बच्चों से, पत्नी से, पड़ोसियों से और जिनको सताया है, मुआफी मांगनी है, उन सबके लिए कुछ न कुछ करना है। काश! मैं औरों के लिए भी सेवाकारी हो सकूं।

श्रीमान गोपाल जी गंगानगर : - यहां आकर बहुत उच्च प्रभाव मिलते रहे हैं। अपनी सारी कमियां नज़र आकर दुख से भरती रही हैं। अपने भीतर बुरी तबदीली आ रही है और आ चुकी है। यह साफ दिखाई देता है। बहुत फिकर भी होता रहा है। सत्संग में बहुत अच्छे प्रभाव पड़ते रहे हैं, परन्तु फिर जल्दी ही मर जाते हैं। मैं अपील करता हूं कि मेरी ज़्यादा से ज़्यादा सहायता करो। मेरा धर्म मार्ग खुल सके, बुरी तबदीली से डर सकूं।

श्रीमान जलघर जी दड़वा (चण्डीगढ़) : मैं घर बिहार गया था। माता जी बिमार थी। मैंने भाईयों से कहा कि जो खर्चा है, मैं देता हूं, आगे से भी दूंगा, माता जी का अच्छे से अच्छा ईलाज करवाओ।

इसके बाद सौभाग्यवान बच्चों ने अपने हाज़िर माता पिता जी को हार पहनाकर, उनके चरणों में सिर रखकर प्रणाम किया। कईयों ने अपने दादा जी वा पिता जी के चरणों में प्रणाम किया। बहुत सुन्दर दृश्य था।

कशोरी लाल जी ने 1500 रूपये, V.P. Singh ने 1100 रूपये, श्री भाग सिंह जी ने 1100 रूपय लंगर के लिए लगभग 11000 रूपये दान हुआ। 600 रूपये की किताबें बिकी, कुछ चन्दा अख़बार मिला। जय ध्वनि के साथ यह सत्संग समाप्त हुआ। बहुत अच्छा वातावरण बनता रहा।

एक हाजरीन

देवात्मा के फरमाया (1)

अफसोस! जो आत्मा टेढ़ी चाल चलता हो, सरलता को छोड़ बैठे और अपने अपराधों को मानने और आगे के लिए उनसे बचने का आकांक्षी न हो, उसके लिए हम कुछ नहीं कर सकते। एक हद है कि जिसके बाद किसी आत्मा का बेहतर होना नामुमकिन हो जाता है। जब आत्मा के भीतर पूर्ण कठोरता आ जाती है, तो उसका सुधरना नामुमकिन हो जाता है, जैसे टेढ़ी सूखी लकड़ी टूट जाती है, लेकिन सीधी नहीं हो सकती, ठीक वैसे ही हालत ऐसे आत्माओं की है। असत्य के तरफदार, टेढ़ी चाल चलने वाले और सरलता से खाली आत्माओं का भला होना बहुत मुश्किल है।

धर्म जीवन

खण्ड 30 अंक 4
अप्रैल 2017
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

स्वर्ग में नर्क

इस विश्व के भीतर मानव का बहु-पक्षिय होने के बावजूद, धर्ममतों, सिद्धांतों, शिक्षा, ज्ञान, विज्ञान का महा विशाल प्रसार होने पर भी, मनुष्य की मूल प्रकृति को ठीक ठीक जाना और पहचाना नहीं जा सका। यह श्रेय, यह अलौकिक अधिकार नेचर ने अपने विकास क्रम में आख़िर परम पूजनीय भगवान देवात्मा को प्रगट करके, उन्हें सौंपा है। उन्होंने अपनी अद्भुत नई रोशनी में देखा और दर्शाया है कि मनुष्य कोई ब्रह्म स्वरूप नहीं, कोई दैवीय नूर नहीं, देवत्व का शोला नहीं, वह मूल से ही एक नारकीय जीव है। वह सुख अनुरागी है, सदा सुख की चाट में रत रहने वाला, सुख-परायण, पाप परायण अस्तित्व है। जब इसके भीतर के नीच सुखों के इश्कों के भूत, अपना खुला खेल दिखाते है, तो तुफान आते हैं, फिर मनुष्य जैसा या इससे बड़ा कोई राक्षस, न कोई डायनासोर, न कोई चोर, डाकू, कातिल, कसाई और न कोई शैतान रह जाता है।

35-40 साल पुरानी बात है जब भटिंडा के निकट एक बहुत बड़ी रेल दुर्घटना सुबह 5 बजे के लगभग हुई थी। किसी रजबाहे का पुल धस्स गया था, सारी रेल के डिब्बे तहस नहस हो गए थे। बहुत मौतें हुई। इस मुसीबत के वक्त निकट के गांवों के लोग उधर की तरफ दौड पड़े। चाय, दूध की बाल्टियां और टोकनियां, पानी, रोटी के टोकरे लेकर, सट्रेचर और गाड़ीयां लेकर, वह सब हमदर्दी से जख्मियों को निकाल रहे थे, उनकी सेवा कर रहे थे, उनको हस्पतालों में पहुँचा रहे थे, दुखियों की सहायता करने का पूरा यत्न लगा रहे थे। दूसरों के दुखों को स्वार्थ रहित बांटने का बड़ा स्वर्गीय नज़ारा था, जैसे वह फरिश्ते बनकर उन दुखियों के लिए आए थे। परन्तु उसी ही समय कुछ राक्षसों और भूतनों की टोली भी पहुँच गई थी, जिन्होंने बुरी तरह मलबे में दबे हुए असहाय लोगों की, कि जो बचाने के लिए मिन्नते कर रहे थे, उनकी एक न सुनी। उनके हाथों की घड़ियां, मुन्द्रियां उतारने के लिए, उनको लूटने लगे, स्त्रियों के गले, नाक, कान के जेवरों के लिए, उन्हें नोचने लगे, फंसे हुए पैरों से अच्छे जूते उतारने के लिए घसीटने लगे, जैसे मांस पर गिद्धें टूटती हैं, उसी प्रकार यह अपने सुख के सके, उनकी बाहें, टांगे, उनके जीते जी ही काट कर अपना मनोरथ पूरा कर रहे थे। एक तरफ अच्छा दिल रखने वाले फरिश्ते स्वर्ग पैदा कर रहे थे, वहां पर ही कुछ मनुष्य राक्षस, वा कसाई बनकर नर्क पैदा कर रहे थे, वह शेर की तरह जीती लाशों को नोच रहे थे।

एक ही दिन में हरियाणा में दो भीष्ण कांड हुए थे, जब एक M.L.A. बाप की बेटी ने सम्पति प्राप्त करने के लिए अपने मां, बाप, भाई, भाभी और

भतीजे आदि 8 जनों को कत्ल कर दिया था, भतीजे के जन्मदिन की खुशी नारकीय दृश्य में बदल गई। दूसरी घटना रोहतक जिले में हुई, जिसने पति से मिलकर 7 परिवार के जनों को मौत के घाट उतार दिया। दोनों को फांसी की सज़ा हुई। मनुष्य प्रकृति कितनी भीष्ण और नारकीय है!

मनुष्य की इसी नारकीय प्रकृति से गुरूमहाराज वा उनका सर्वोच्च और परम हितकर, यक्ता वा परम महान कारज भी कैसे सुरक्षित रह सकता था। कभी चन्दा सिंह के अंहकार, घृणा और द्वेष के पागल कुत्ते की तरह गुरू महाराज वा उनके निर्दोष कर्मचारियों के पीछे पड़कर, उनको बुरी तरह वर्षों तड़पाता रहा, कभी देव रतन साधू के पालतु शेर की तरह, जो अपने पालनहार साधु के हाथ को चाटते हुए, खून मुंह में लगने से साधु को ही खा गया, उसी प्रकार 24 वर्ष बाद देवरतन का भी अहंकार और नीच वासनाएं बढ़ने से गुरू महाराज के बुढापे में, कृतघ्न बनकर उन पर जान लेवा हमले वा तसीहे देने वाला बन गया। बहुत उच्च योग्यताओं से जो उसने सुनहरे दिन समाज में गुज़ारे थे, वह नारकीय जीवन बिताने के लिए बेबस हो गया। फिर मन्सा राम के जब सुख पर चोट लगी, वह पागल हो गया और गुरू महाराज को काटने लगा। कबर में से निकाला अब्दुल गफूर जो राक्षस से इन्सान बनकर स्वर्गीय ज़िन्दगी जी रहा था, परन्तु जब उसके नीच भाव भड़कर उठे तो उसकी कृतघ्नता ने अपना तांडव नाच करके गुरू महाराज को तो वह असहनीय सताने वाला बन गया और बहुत से अपनी प्रकृति से बेबस होकर गुरू महाराज और उनके पाक मिशन की बहुत बड़ी हानि करने के लिए मजबूर हो गए। गुरू के घर में जन्मे और पले, पुत्रों और बेटी ने अपने देव पिता को पहचानना तो क्या था, उनको डसने का काम किया। बहुत से कर्मचारियों ने भी ख़ैर नहीं गुज़ारी। मनुष्य महां नारकीय वजूद है, वह स्वर्ग में नर्क पैदा करने से बाज नहीं आता। नीचे एव सेविका का हृदय को दहला देने वाला एक पुराना 1941 का पत्र पेश करते हैं, जो मनुष्यों की सही नारकीय तस्वीर पेश करता है।

"परम पूजनीय भगवन! आज मैं निज के साधन में कुमारी प्रेम देवी जी के जीवन चरित्र में से एक भाग का पाठ कर रही थी, उसमें आपके सम्बन्ध में उनके बेहद कीमती भजन के गान और आपकी पवित्र सेवा में लिखा एक बहुत कीमती पत्र के पाठ ने मेरे दिल पर जो उच्च प्रभाव डाले, उनका वर्णन करने के मैं अपने आपको अयोग्य समझती हूं। जैसे वह आपके लिए अपने आपको कृतज्ञ अनुभव करती थी, आपके लिए उनके हृदय में जो उच्च भाव विकसित हुए थे, उस छवि के सामने आने से, मुझे अपनी आत्मिक अवस्था बहुत घृणित बोध हुई।

भगवन! आपने बहुत बड़ी कृपा करके, मुझ तुच्छ को अपने ग्रह में रहने का अधिकार दिया, परन्तु शोक! मैं अबोधी और स्वार्थी ने उस पाक अधिकार की महिमा को न देखा और उसे सफल न किया। इसके विपरीत मैं अपनी कई उल्टी गतियों से आपको बहुत आघात और कष्ट पहुँचाए। आज जहां आपके और माता जी के कई उपकारों को सामने लाकर मेरा हृदय झुक रहा है, वहां अपनी कई हानिकारक और अति कष्टदायक क्रियाएं सामने आने से मैं बहुत शोक से भर गई हूं, मेरी आंखों से दुख और शर्म के आंसू बह रहे हैं, मुझे ऐसा प्रतीत होता है, कि जैसे किसी रोगी के सामने, जिसे भूख न लगती हो, बहुत सुन्दर थालों में और बहुत अच्छे और स्वादिष्ट कई प्रकार के भोजन लाकर रख दिए जाएं, वह उनकी ओर मुंह करके भी नहीं देखता, उसी प्रकार मेरा हाल था: -

1) मेरे भीतर अपने आत्म हित की कोई भूख

नहीं थी, इसलिए मैं आप जी के घर में रहकर केवल यही नहीं कि आत्म हित की कोई महिमा देख रहीं थी,

2) बल्कि अपनी अन्धता के कारण, उसकी कोई क़दर न कर सकी।

3) और उस दुर्लभ अवसर को मैंने ऐसे ही गंवा दिया।

4) मैं अपने नीच घमंड के कारण, आप जी के पास जाकर प्रणाम करने और ऐसा करके आप जी का आर्शीवाद लेना पसंद नहीं करती थी।

5) मैं स्वार्थ के वश में होकर आपके या आपके पारिवारिक जनों के सम्बन्ध में किसी प्रकार सेवाकारी होना नहीं चाहती थी।

6) मैं सेवा सम्बन्धी किसी काम को अपने लिए मुसीबत समझकर ठीक प्रकार से पूरा नही करती थी।

7) और अपनी कर्तव्य बोध वहीन प्रकृति के कारण आपको कई प्रकार के आघात और कष्ट पहुँचाने का कारण बनती थी।

8) मैं स्वर्ग में नर्क पैदा करने वाली बनती थी।

9) मेरी इन भयानक गतियों की लम्बी लड़ी है।

10) परम पूजनीय भगवान! आपके और आपके परिवारिक जनों के सम्बन्धों में मेरी ऐसी दुखदाई क्रियाएं, मेरे सामने आकर बहुत लज्जा और शर्मसारी से भर रही हैं।

यह उदाहरण मशहूर है, कि "कुत्ता राज बैठाईए, चक्की चट्टन जाए" मेरा हाल इससे भी बुरा था, आप जो मुझे महा दान देने के लिए मेरा परम हित करना चाहते थे, मैंने उसे लेना नहीं चाहा। उसकी महिमा को महसूस नहीं किया, दूसरी तरफ कुमारी प्रेम देवी जी भी मेरी तरह एक स्त्री थी, परन्तु वह बहुत उच्च श्रेणी का हृदय रखती थी। इसलिए उन्होंने आपके ग्रह में रहकर, जिस प्रकार आपकी सच्ची श्रद्धावान और आत्म हित की सच्ची अभिलाषी बनकर, आपका महा दान प्राप्त करके, अपने जीवन को धन्य धन्य किया, उस प्रकार मैं आपके घर में रहकर अपनी निम्न प्रकृति के कारण, अपने आपको धन्य धन्य न बना सकी, जिसको याद करके इस समय बहुत शोक के साथ भरी हुई हूँ। मैं ऐसी कामना करती हूं कि किसी प्रकार मैं आगे के लिए अपने हित का मार्ग खोलने के योग्य हो सकूं।"

परम पूजनीय भगवान के जीवन के लक्ष्य का उनकी अद्वितीय शिक्षा का, उनके अद्वितीय कारज का, उनके अद्वितीय मिशन का मुख्य कार्य-क्षेत्र "मनुष्य प्रकृति" ही है। मनुष्य की प्रकृति को संवारने और उच्च बनाने और उसे नाश और दुख से बचाने उसकी सदा अधिक से अधिक रक्षा और विकास करने का है। परन्तु जब तक यह मनुष्य प्रकृति श्रद्धेया जी की तरह, श्रद्धेय श्रीमान बुद्ध सिंह जी की तरह, श्रद्धेय श्रीमान धर्म बल जी की तरह, श्रद्धेय धर्म प्यारी जी की तरह, अपने आत्मिक हित की, भगवान के अद्वितीय प्रभावों की भरसक प्राप्ति के अधिकारी होकर, बेहद भूखी न बन जाएं, तब तक मनुष्य की नीच प्रकृति का भगवान का अद्वितीय मिशन हमेशा शिकार (जैसे पहले बनता रहा है) बनता रहा है और बनता रहेगा। श्रद्धेय धर्म प्यारी जी और सन्त राम जी सगे भाई बहन थे। सन्त राम जी ने भगवान का खाना बनाने की सारी उमर सेवा की, परन्तु जो भगवान का मिशन और कारज श्रद्धेय धर्म प्यारी जी के हाथों में उनके दुर्लभ पाक उदाहरण के साथ सुरक्षित और विकसित होने के लिए हुआ, वह बात भाई का जीवन, जो आत्महित से वंचित था, नही कर सका। उनके हाथों गुरू घर सुरक्षित रहा, ऐसा बिल्कुल नहीं कहा जा सकता। मनुष्य प्रकृति अपना नर्क अवश्य पैदा करके ही रहती है। गुरू महाराज का कारज मनुष्यों के स्वार्थ वा नीच प्रकृति का शिकार होने के लिए ही है।

आत्म हित की खुराक है त्याग, सेवा, तन, मन, धन, सुख स्वादों का समर्पण, परन्तु मनुष्य प्रकृति की खुराक है, सुख, स्वाद, ऐश आराम या महा स्वार्थ, पद, प्रभुत्व, पैसा और प्रशंसा आदि।

आत्म - हित की दुर्लभ और महा स्वर्गीय इच्छा सात्विक प्रकृति के बिना पैदा नहीं हो सकती। जैसे भाई मोहनदेव जी, श्रीमान भाई अतर सिहं जी आदि के जीन थे। श्रद्धा, कृतज्ञता, हमदर्दी, परसेवा और हानि परिशोध के सुन्दर भाव ही मनुष्य को सुन्दर रूप देते हैं। जिस जन के भीतर गहरी कृतज्ञता वा गहरी हानि परिशोध के भाव होंगे, वह कभी अपने गुरू के मिशन के लिए हानिकारक नहीं हो सकता। यह भाव भी त्याग करवाते हैं। जिस जीवन में कृतज्ञता नहीं, उपकारियों के प्रति ऋण परिशोध के अति सुन्दर दृष्टांत नहीं, विशेषकर जिस जीवन में हानि परिशोध की लड़ियां नहीं मिलती, अपनी तरफ से हुई हानियों पर दुख भरे आंसूओं के सैलाब नहीं दिखते, उन मनुष्यों से उपकारी तो एक ओर, सांपों, शेरों की तरह कोई भी सुरक्षित नहीं हो सकता। आत्म - हित की सच्ची इच्छा अंह - बोध के बिना पैदा नहीं हो सकती। इन बोधों से रहित जनों से न केवल गुरू का अद्वितीय कारज या मिशन सुरक्षित नहीं हो सकता, बल्कि ऐसे हाथो में गुरू मिशन महा हानि और नाश से नहीं बच सकता। इन उच्च बोधों के बिना, त्याग, समर्पण, सादगी, सेवा के दृश्य पैदा नहीं हो सकते।

जैसे राजों, महाराजों के सम्बन्धी शहज़ादे समाज में कर गए। इन दुर्लभ उच्च बोधों से रहित प्रकृति, महा - स्वार्थी, बेईमान, चोर, डाकू, और लुटेरे बनने के लिए, मोटी मिथ्या और मोटे पाप छोड़कर भी मजबूर रहते हैं। अपने सुख, स्वार्थ, अपने ही परिवार, अपने ही बेटे वा बेटी के स्वार्थ की कैद से ऐसा जन बाहर नहीं निकल सकता। उसके भीतर परत्व सोच का पैदा होना असम्भव है। आत्म - हित से बिल्कुल अन्धा जन कहावत के अनुसार "अन्धा बांटे रेवड़ीया, और मुड़ मुड़ अपनो को दे" ऐसे जन अपने या अपने परिवार के स्वार्थ से बिल्कुल ऊपर नही हो सकते। यदि गुरू महाराज का मिशन बदकिस्मती से कभी ऐसे अबोधियों के हाथ में आ जाता है, जैसा कि उच्च आत्माओं की अवर्तमानता में आना आवश्यक है, तो गुरू के मिशन का यही हाल होना ज़रूरी है, जो आज भारत में सरकारों वा राज - सरकारों का हो रहा है।

गुरू महाराज ने इस धरती को स्वर्ग बनाने के लिए खून से सींच सींच कर समाज बनाई है, और महा दुर्लभ, मनुष्य जीवनों और सम्बन्धों में सच्चे स्वर्ग पैदा भी किए हैं, परन्तु महा अबोधी और आत्म - हित से मीलों दूर जन, फिर भी गुरू महाराज के उपजाए स्वर्गों में अपना नर्क पैदा करने से बाज नहीं आएंगे। यह बात अलग है कि साधारण सेवक सेविका इस सत्य को कितना देख सकेंगे।

नीच जीवन ज़हरे - कातिल है, यह अमृत को ज़हर और स्वर्ग को नर्क बना देता है और बनाएगा।

समाज में एक बहुत अच्छे सेवक हुए हैं, गुरू महाराज और अपने उपकारी कर्मचारी और माता - पिता के लिए ठोस श्रद्धा और कृतज्ञता के भाव रखते थे। उन्होंने अच्छा धन कमाया। अपने श्रद्धेय माता पिता की श्रवण कुमार की तरह सेवा की, उनके बार बार चरण धोए, चरणामृत लिए, भेंटें दी। गुरू घर की जगह जगह बहुत सेवा की। उनके बेटियों ही थी, पुत्र नहीं रहा था। उन्होंने अपनी बेटियों को पढ़ा लिखाकर उनकी शादी कर दी थी, शादी के बाद फिर अपनी बहुत सी जायदाद लड़कियों में बांट दी थी, उसके बाद वह गुरू मिशन के लिए और सेवाकारी होकर अपना कर्ज़ा चुकाना चाहते थे। उन्होंने 2 - 3 मन्दिरों के लिए स्थान बनाए और गुरू कारज के लिए कुछ

जायदाद वा दुकानें आदि के ट्रस्ट अपने माता - पिता, और उपकारी कर्मचारी के नाम रजिस्टर करवा दिए। समाज के कुछ योग्य, त्यागी वा निस्वार्थ भाव से काम करने वाले जनों को विशेष अधिकार दे गए कि समाज चलाने के साथ साथ, जितनी देर यह ट्रस्ट चल सकें, मेरे उपकारियों की याद में ट्रस्ट चलाते जाएं। उन्होंने अपने श्रद्धेय पिता जी वा निजी जायदाद का पैसा पैसा भी गुरू मिशन को दान देने के लिए पिता जी को तैय्यार कर लिया। पिता खुशी खुशी मान गए। उन्होंने यह भी अपनी वसीयत में लिख दिया कि जब यह ट्रस्ट न चल सकें, जो सारी जायदाद वा पैसा गुरू मिशन में लगा दें। उनके पिता ने अपनी एक इच्छा ज़ाहिर की, कहा कि तीन खर्चे मैंने करने हैं, एक तो मेरी पत्नी ने मेरी बहुत सेवा की है, उसको कुछ हज़ार देने हैं, इसी प्रकार एक बहुत योग्य पोती ने मुझसे वचन लिया है 30 हज़ार रूपये मैं एक और बेटी को उसकी बेटी की शादी पर देने हैं। उस महान सपूत ने कहा कि पिता जी, आपकी तरफ से उनको मैं दूंगा। आप अपना पैसा पैसा गुरू मिशन में लगाकर अपना भला करो। उस सपूत ने ऐसा करके फिर स्वर्ग पैदा किया। 10 - 12 वर्ष तो उस सपूत की इच्छानुसार ठीक ठाक चलते रहे, फिर उनकी एक पुत्री जो ट्रस्ट की मैंबर थी उसके हालात बदले, उसके साथ उसके पति के भाव भी बदल गए। उन्होंने ट्रस्ट की विशेष जायदाद पर नज़र रखनी शुरू कर दी। और अपने पिता समान बजुरग को कड़वी आंख से देखना शुरू कर दिया, उनको बुरा भला कहना, निन्दा वा अपमान करना शुरू कर दिया, आखिर बड़ा धोखा करके अकेले, बिना किसी अधिकार के चोरों, ठगों को, नियम तोड़कर उस ट्रसट की खास ज़मीन बेचकर उसे हज़म करने की कार्यवाई करके, उपकारी पिता की इच्छाओं और अरमानों पर बुरी तरह लात मार दी। उस ज़मीन के साथ मन्दिर भी बेच दिया। अपने पिता जैसे बजुरग कर्मचारियों को, कचहरियों और मुकदमों में उलझा दिया। पिता के पैदा किए स्वर्ग में पूरा नर्क पैदा कर दिया। जैसे शेर को बकरा खाने के समय, बकरे के दुख सुख, उसकी चीख़ पुकार, उसके जीने मरने, उसके तड़पने का कोई ख़्याल नहीं आता, उसी प्रकार बेटी को भी अपने पिता, अपने दादा की पाक इच्छा, दुख सुख का ख़्याल ही नहीं रहा। समाज का कारज और बजुरग, पूरा जीवन समर्पित कर्मचारी तो उसके क्या लगते थे।

नेचर के भीतर विकासकारी बिभाग के अधीन उच्च भावधारी सदा स्वर्ग पैदा करने के लिए ही हैं, परन्तु नीच भावों के अधीन सुख अनुरागी, महा स्वार्थी मनुष्य सदा स्वर्ग में नर्क पैदा करने के लिए हैं। यह नेचर के नियमों, वा मनुष्य की सुख अनुरागी प्रकृति के अनुकूल ही है और सब संस्थानो, धर्म समाजों, देशों, विदेशों में व्याप्त है, यह कोई अनहोनी नहीं।

बलदेव सिंह

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने, कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। : - श्रीमान बलदेव सिंह जी

House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229,
2716914

भगवान् देवात्मा का पुजारी कौन हो सकता है?

भगवान् देवात्मा के पुजारी वही जन हो सकते हैं जो आत्मा के मूल लक्ष्य के बोधी हो चुके हों और यह अनुभव कर चुके हों कि आत्म विनाश से मोक्ष और उच्च जीवन लाभ के बिना मेरे लिये और सब कुछ लाभ निष्फल हैं। भगवन् देवात्मा स्वयं फरमाते हैं:

"इस पृथ्वी के प्रत्येक देश में लाखों जन ऐसे पाये जाते हैं कि जो धन, मान, पद और आधिपत्य आदि के लाभ को ही अपना परम लाभ समझते हैं और यह उन्हीं के पीछे जाकर अपना समस्त जीवन नष्ट कर देते हैं। वह एक-एक गनवर्नर वा उच्च पदस्थ राज-कर्मचारी की प्रसन्नता के लिये लाखों रूपया खर्च करते हैं। नाना प्रकार के और त्याग ग्रहण करते हैं क्योंकि वह जिन चीजों को चाहते हैं, वह उन्ही की प्रसन्नता के द्वारा लाभ हो सकती हैं। इस प्रकार यदि किसी को सत्य ज्ञान की ज्योति में यह उपलब्ध हो कि आत्म विनाश से मोक्ष और उच्च जीवन लाभ के बिना मेरे लिये और सब कुछ लाभ निष्फल हैं, तभी वह जीवन दाता श्री देवगुरू भगवान् का अनुरागी और पुजारी बनने की आकांक्षा कर सकता है।"

आगे चलकर भगवान् देवात्मा मनुष्य आत्माओं से यह प्रश्न करते हैं:

"तुम अपने भीतर परीक्षा करके देखो कि तुम्हारे हृदय पर तुम्हारी वासनाओं आदि (नीच सुख अनुरागों) का कहां तक अधिकार हैं? हो सकता है कि तुम्हें मान-मर्यादा की कुछ परवाह न हो। धन की परवाह न हो, किसी इन्द्रिय जनित सुख की परवाह न हो। तब भी प्रश्न यह है कि तुम्हें किस की परवाह है? सवेरे से सायंकाल तक तुम्हारा सारा परिश्रम किस के लिये होता है? यह नहीं कि तुम्हें धन नहीं कमाना चाहिए और उसकी कोई आवश्यकता नहीं। यह नहीं कि तुम्हें मान-मर्यादा की इच्छा नहीं रखनी चाहिये। यह नहीं कि तुम्हें किसी उच्च सुख की कामना नहीं करनी चाहिये। परन्तु तुम में से प्रत्येक जन आत्म परीक्षा करके देखे कि उसका यह सब कुछ चाहना किस उद्देश्य को लेकर है। क्या यह सब कुछ उसके धर्म पथ में सहाय होने के लिये है? क्या यह सब कुछ उसके धर्म मार्ग में कहीं काम आने के लिये हैं? यदि तुम्हारी शारीरिक पुष्टि, तुम्हारा शारीरिक बल इस लिये है, कि वह तुम्हारे आत्मा के हित साधन में सहायकारी न हो, तो तुम निश्चय जानो कि तुम्हारे लिये ऐसा लाभ विनाशकारी है। इस प्रकार सोचो कि तुम जो कुछ धन कमाते हो, वह किस लक्ष्य को पूरा करने के लिये? हज़ारों मनुष्य धन को केवल धन के लिये कमाते हैं, उनके भीतर एक ऐसा व्यसन पड़ जाता है कि वह धन के लालची होकर उसके दिनों दिन बढ़ाने में ही तृप्ति पाते हैं और उनमें भी कई इतने नीच होते हैं कि उसे अपने वा अपने पारिवारिक जनों के शरीर की रक्षा के लिये भी उचित रूप से व्यय करना नहीं चाहते। वह केवल उसके ढेर के बढ़ाने में ही प्रसन्नता लाभ करते हैं। ओह! ऐसे नीच मनुष्यों की यह कैसी दुर्दशा!!

"मान लो कि तुम इतने अंश नीच नहीं हो, तो भी विचार करो कि तुम किस लक्ष्य के लिये जीते हो और किस लक्ष्य के लिये सांसारिक पदार्थ एकत्र करते हो? क्या इसलिये कि वह तुम्हारी और उचित आवश्यकताओं के अतिरिक्त उच्च जीवन सम्बन्धी उच्च लक्ष्य में खर्च हो। यदि जीवन का कोई उच्च लक्ष्य तुम्हारे सन्मुख हो, तो तुम धन केवल इकट्ठा करने में तृप्ति नहीं पाओगे न ऐसे धन को ऐसे जनों के लिये छोड़ जाने के लिये सुख लाभ करोगे, कि जो

तुम्हारे पीछे एक या दूसरे शोचनीय पाप के वशीभूत होकर न केवल तुम्हारे धन का नाश करेंगे, किन्तु उस के द्वारा अपना भी नाश करेंगे।"

आगे चलकर भगवान् देवात्मा धन के लक्ष्य की असल हकीक़त निम्नलिखित पंक्तियों में प्रकाशित करते हैं:

"तुम जानते हो कि यह चांदी सोना क्या वस्तु हैं? वह केवल जड़ पदार्थ हैं, जैसे और कितने ही जड़ पदार्थ हैं जो भूमि के खोदने से निकलते हैं, वैसे ही सोना चांदी खनिज पदार्थ हैं जो पृथ्वी से निकलते हैं और इस पर पड़े रहते हैं। यदि उनके द्वारा तुम्हारे आत्मा का कोई कल्याण हो सके, यदि वह किसी शुभ कारज में खर्च होकर तुम्हारे उच्च जीवन के लाभ में कुछ सहायकारी बन सकें, तो उनका पाना तुम्हारे लिये सफल हो सकता है, नहीं तो उनके भीतर जो जड़ तत्व है, वह तुम्हें भी जड़ बनाता जावेगा और तुम्हारे नाश का हेतु बन जाएगा।"

भगवान् देवात्मा अपनी देव वाणी का प्रकाश करते हैं:

"केवल यह यथेष्ट नहीं है कि तुम इस या उस बुरी रीति से धन या पद लाभ नहीं करना चाहते। केवल यही यथेष्ट नहीं है कि इस या उस बुरी विधि से मान और यश लाभ करना नहीं चाहते, किन्तु बात यह है कि यदि यह सब तुम्हारे जीवन के उच्च लक्ष्य में सहाय होने के लिये नहीं, तो निश्चय इन सबको पाकर तुम दिनों दिन विनाश की ओर जाओगे।"

भगवान् देवात्मा फिर एक जगह हमारे परमहित के लिये अपनी देव वाणी का प्रकाश करते हैं:

"मान को लक्ष्य रखकर मान न चाहो, धन को लक्ष्य रखकर धन न कमाओ, इन्द्रिय सुखों के लिये परिवार न बनाओ, पद के लिये पद न चाहो। ऐसा करके तुम और अधार्मिक लोगों की न्याईं ही रहते हो और तुम में और उनमें कोई भेद नहीं रहता। किन्तु तुम उनमें से जो कुछ चाहो, जो कुछ लाभ करो, वह उच्च लक्ष्य रखकर उन्हें अपने जीवन में सहायक बनाने के लिये। इस लिये तुम्हारे सब नीच लक्ष्यों के बदल जाने की नितान्त आवश्यकता है। तुम गृहस्थ में रहकर, स्त्री रखकर, संतान रखकर, धन-उपार्जन करके, शारीरिक रक्षा करके, यह विवेचना करके देखो, कि इन में से कहां-कहां और किस-किस में अमृत के स्थान में विष भरा हुआ है कि जो तुम्हारे लिये विनाशकारी है और तुम्हारे बन्धन का कारण बन रहा है। और तुम्हारे आत्मा को जीवन दाता भगवान् की ओर जाने नहीं देता।"

फिर एक स्थान पर भगवान् देवात्मा हमें जिस पवित्र और शुभ आकांक्षा करने की शिक्षा देते हैं, वह यह है:

"ऐसी इच्छा करो कि तुम्हारा लक्ष्य उच्च हो अर्थात् जीवन दाता श्री देवगुरू भगवान के साथ अनुराग उत्पन्न करके उच्च जीवन की प्राप्ति के लिये हो। क्योंकि जब जीवन दाता श्री देवगुरू भगवान् के प्रति तुम्हारे हृदय में अनुराग उत्पन्न होकर बढ़ेगा, तब ही धीरे-धीरे तुम्हारे मोह उत्पादक और विनाशकारी बन्धन कट सकेंगे। इसलिये तुम अपने भीतर प्रश्न करके देखो, कि क्या तुम्हारे जीवन का लक्ष्य उच्च बन गया है? क्या तुम्हारे हृदय का सम्बन्ध जीवन दाता भगवान् के साथ स्थापन हुआ है? क्या तुम्हारे भीतर उनके प्रति अनुराग दिनों दिन उन्नत हो रहा है?"

भगवान् देवात्मा ने अपने पवित्र ग्रन्थ देव शास्त्र खंड तीन में इस अनुराग को देव प्रभावों का अनुराग बताया है। भगवान् देवात्मा के देव प्रभाव ही यह जादू का असर रखते हैं कि वह हमारे नीच बन्धनों को तोड़ देते हैं और हमारे भीतर उच्च अर्थात्

सात्विक भावों को उन्नत कर सकते हैं। इसलिये उच्च लक्ष्य के बोधी जन के सन्मुख देव प्रभावों की क़ीमत बढ़ती जायेगी और वह उनका अनुरागी बनता जायेगा। भगवान् देवात्मा के देव प्रभावों का प्रेम देवात्मा के देव रूप का ही प्रेम है, इसलिये वर्षों पहले जो भगवान् देवात्मा ने अपनी देव वाणी का प्रकाश किया था, उसमें इस सचाई को उन्होंने इस प्रकार वर्णन किया:

"यदि जीवन के विनाश और विकास सम्बन्धी तत्वों को भली भांति उपलब्ध कर सको, तो तुम अपने जीवन के सच्चे रक्षकर और विकासक श्री देवगुरू भगवान् को सबसे बढ़कर प्रिय बनाने के अवश्य इच्छुक बन सकते हो और उनके सच्चे अनुरागी और अनुगत बनने की अवश्य आकांक्षा कर सकते हो।"

इन पंक्तियों के द्वारा भगवान् देवात्मा ने यह क़ीमती तत्व प्रगट किया है, कि उनके सच्चे पुजारी कौन हो सकते हैं।

मुझ अति अदना और तुच्छ पर महा उपकार

नेचर का महान नियम है कि हर प्राणी, हर जीवधारी दो बातों की देन है। एक विरासत और दूसरी वातावरण। इसलिए मनुष्य जो कुछ भी होता है या बनता है, वह पैतृक विरासत वा उसके जीनज़ और उसके वातावरण के द्वारा ही है। किसी भी धर्म के मुसाफिर के लिए उसकी हृदय की विरासत, जिसकी प्राप्ति में उसका अपना कोई हाथ नहीं होता, उसके बाद उसका वातावरण, उसके चौतरफा प्रभाव, उसका महौल ही होता, जो उसकी परस्नैलिटी को घड़ता है, संवारता है या बिगाड़ता है। हर उच्च जीवन के अभिलाषी को, उच्च संगत, अति निराली या महान संगत का मिलना आति आवश्यक होता है। मेरे भी महा सौभाग्य कि मुझे भी परम पूजनीय भगवान देवात्मा द्वारा साक्षात निर्मित अद्वितीय संगत में परवरिश पाने का, पाकिस्तान बनने से भी पहले से लेकर सन 1970 तक के 25 वर्षों तक शुभ अवसर मिल गया है। यह समय और उस समय की वर्तमान संगत बेहद कीमती थी, और अत्यन्त आवश्यक था। उस विशेष संगत के बिना (चाहे वह देवात्मा निर्मित संगत की अख़िरी tail ही थी) मैं बेहद घाटे में रहता। उच्च जीवन सम्बन्धी कई आवश्यक अंगों की प्राप्ति के पक्ष में, मैं अवश्य और खाली ही रह जाता। इसलिए परम पूजनीय भगवन देवात्मा का उच्च संगत का दान ही मुझे अपने तुच्छ वजूद पर इतना बड़ा महा उपकार अनुभव होता है कि उसको किसी प्रकार भी शब्दों में ब्यान नहीं किया जा सकता।

परम पूजनीय भगवन देवात्मा ने उच्च संगत के सम्बन्ध में फरमाया है: -

"अन्धकार ग्रस्त और नीच वासनाओं वा उतेजनाओं और अंह शक्तियों के नावाजिब कब्जे में फंसे हुए आत्माओं की विनाश से रक्षा और उनका विकास साधन करने के लिए, देवात्मा ने एक निहायत नादर दुर्लभ उच्च संगत पैदा की है। यह उच्च संगत विशेष है। यह संगत कोई साधारण जोड़ मेला या वाक विलास या कथा कीर्तन आदि की संगत नहीं, बल्कि यह वह संगत है, कि जो देवात्मा के देव प्रभावों को आत्माओं तक पहुँचाने में सहायकारी सिद्ध होती है। इस संगत में बैठकर आत्माओं का अन्धेरा दूर होता है, उनकी बेसुधि दफा होती है और उन्हें अपनी रूहानी ज़िन्दगी के सम्बन्ध में सच्ची रोशनी और होश मिलती है। एक या दूसरी नीच गति अपने असली और महा हानिकारक रूप में दिखाई देती है। और इस से निकलने या मोक्ष पाने के लिए प्रेरणा पैदा होती है। एक या दूसरे प्रकार का उच्च भाव पैदा होता है ओर बढ़ता है ओर इस एक या दूसरे सम्बन्ध में कुछ न कुछ सेवाकारी

बनना चाहता है और इस प्रकार आत्मिक उच्च रूप या विकास प्राप्त करता है। ऐसा हो कि आप इस नादर उच्च संगत की कदर कर सको...."

बेशक जो महान सत्संग जो गुरू महाराज की वर्तमानता में 1892 - 93 से 1925 - 26 तक था, जब श्रद्धेया जी, पंडित परमेश्वर दत्त जी जैसी अनुरागी हस्तियां इस पृथ्वी पर वर्तमान थी, श्रद्धेय बड़े पंडित जी, श्रद्धेय देवत्व सिंह जी महाराज, श्री देव रतन जी, भाई अमर सिंह जी, भाई मोहन देव जी, स्वामी गोबिन्द राम जी आदि अपने भरे यौवन में कार्यरत थे। वह महा उच्च संगत तो मुझे नसीब नहीं हो पाई। जिस अद्वितीय संगत ने बहुत बड़े और महान परिवर्तन पैदा किए। उनकी वर्तमानता से देव समाज की साख़ वा गौरव की शान और ठोस बुनियाद का यक्तापन स्थिर और उज्जवल हुआ था। जिस संगत ने समाज को राजे महाराजे और उनके निकटी सम्बन्धियों तक पहुँचा दिया, समाज ने बजरंग बिहारी जी, दिवान हासामल जी, भाई अतर सिंह जी, सरदार गुरूमुख सिंह जी, सरदार जमीयत सिंह जी, सरदार हरनाम सिंह जी, फरिश्ता तहसीलदार सरदार सावन सिंह जी और बहुत सारे तहसीलदार, कनूनगो, पटवारी, टीचर, वकील और शाहूकार दिए। जिस में समाज के ठोस कार्य की धाक पंजाब, हरियाणा, कश्मीर के एक गर्वनर और भारत के वायसराए के विशेष साथी और सलाहकार हैनरी करेक तक पहुँची, जिन्होंने मुजरिम बस्तियों के सुधार का कारज देव समाज को सौंपा। जिन्होंने समाज के स्कूलों में आकर समाज की शान को बढ़ाया। उस समय जो समाज के क्षेत्र बने और जो समाज के कारज का, संस्थाओं का विस्तार, प्रसार हुआ। जितने कर्मचारी, वर्करज़ खड़े हुए, वह सब कुछ समाज की शान का शिख़र था। फिर विशेष कर पाकिस्तान बनने के बाद धीरे धीरे तालाब के पानी सूखने की तरह सब आन, बान और शान निरन्तर सुकड़ती ही गई।

संगत की परख़, मनुष्यों के इकट्ठ या जोड़मेल, या सभाओं, लैक्चरों या ड्रामों, गानों या लाखों रूपये खर्च कर सजावटें, रोशनियों से नहीं होती। सच्ची संगत की परख़ केवल उसमें उपजे - जीवन परिवर्तनों और उन परिवर्तनों के स्तर से ही होती है।

मुझे जिन महा पुरूषों की दुर्लभ संगत प्राप्त हुई, वह देव समाज के उक्त सुनहरी युग की ही सारे या बहुत सारे उपज हैं। उनकी जड़ें उसी युग के साथ जुड़ी हुई हैं। इस समय के मुख्य जन वह थे, जिनको गुरूमहाराज की दर्शन प्राप्ति और शरण प्राप्ति का फख़र प्राप्त रहा था। जिन्हें Master's Touch की प्राप्ति ने घड़ा हुआ था। गुरू महाराज के अद्वितीय अनोखे वातावरण में प्रतिपालित होने के कारण उन्हें विशेष देवत्व की अमूल्य कीमत की प्रयाप्त जानकारी थी। उन मुख्य जनों के जीवन इतने ऊंचे थे कि उनके सामने सारी दुनिया के महान लोग आज भी बौने दिखते हैं।

वैसे मैंने दर्शन तो, उच्च लोकवासी श्रीमान निर्मल सिंह जी कुहारवाला, सरदार सरमुख सिंह जी, श्रीमान डाक्टर सोनपार जी, श्रीमान साधू जानकीदास जी, श्रीमान हरनाम सिंह जी मल्लके, श्रीमती सतभामा जी, श्रीमती सतवन्ती जी, ऐसे और कई जनों के भी किए हैं। परन्तु मुझे घड़ने वाले (बनाने वाले) श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी, श्रद्धेय श्रीमान मेवा सिंह जी, श्रद्धेय श्रीमान गुरूवन्त सिंह जी, और उनके भाई श्रीमान गुरूबख़्श सिंह जी ही रहे। क्योंकि सन 1855 - 56 में मुझे विकासालय की स्वर्गीय संस्था में प्रवेश करने का सौभाग्य मिला, जब श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी वा उनके उक्त साथी इस धरती पर विराजमान थे। उस समय उसके मुख्य संचालक और सर्वोपरि श्रीमान ईश्वर सिंह जी और उक्त साथी ही थे।

श्रद्धेय कनल जी और उनके महान सपुत्र श्री काका जी की सभाएं और लैक्चर सुनने का सुअवसर भी प्राप्त रहा। उनकी अमिट छाप भी मेरे जीवन पर पड़ी। इन सबकी मुझे बहुत निकटता प्राप्त थी। इनके जीवनों को बहुत निकटता से देखने का और निहारने का सौभाग्य मुझे प्राप्त रहा।

बेशक मुझे बहुत गहरा दुख और चिन्ता रही कि गुरू महाराज की वर्तमानता में उनके चरणों में आने के महा सौभाग्य से वंचित रहा और न मुझे श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी महाराज की चरण संगत की प्राप्ति हो सकी, परन्तु फिर भी उस समय देव समाज में प्रवेश करने का सौभाग्य मिल गया जब श्रीमान ईश्वर सिंह जी और उपरोक्त उनके सभी उच्च साथी, इस पृथ्वी पर विराजमान थे। उनके दर्शन और उनकी उच्च चरण संगत को पाकर मैंने सदा ही यह अनुभव किया है कि नेचर ने मुझे यह सौभाग्य प्रदान करके मुझसे कुछ भी छुपाकर नहीं रखा। मेरे महा सौभाग्य कि मैं अति तुच्छ और नीच वजूद को ऐसे फरिश्तों के दर्शन, निकटता और संगत मिल गई, जिससे धर्म जगत में मेरा जो कुछ बनना सम्भव था, उसकी बुनियाद रखी गई।

श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी बहुत ही महान हस्ती थे, जिन्हें साक्षात गुरू महाराज की चरण सेवा में आठ वर्षों से भी अधिक समय के लिए रहने का महा सौभाग्य प्राप्त रहा। उनका व्यक्तित्व ऐसा उच्च गुण सम्पन्न था, कि मनुष्य तो क्या फरिश्ते भी उन जैसा बनने को लिलायत थे। वह त्याग, श्रद्धा, गुरू भक्ति और गुरू सेवा की महान मूर्ति थे। मानो नम्रता, दीनता, सादगी के पुंज थे। पवित्रता के शिखर थे। उन्होंने जो गुरू इच्छा को सिर पर रखकर 8 वर्ष मश्क ढोने की, फिर गुरू की रिक्शा खींचने की भक्ति का महान तप कमाया है, वह बेमिसाल है। उनके भीतर स्त्रियों के भले का, पेड़ पौधों की सेवा के जो अनुराग थे, वह भी मानव समाज में बहुत कम देखने को मिलते हैं। जिस प्रकार और जिस क़दर मेरा उनकी छत्रछाया ने हित किया है, उतना महान फैज़ मैं किसी भी हस्ती से प्राप्त नहीं कर सका। उनकी सभाएं, उनकी सेवाएं, और उच्च कोटि के पैदा किए दृश्य, अधिकारी हृदयों के लिए उच्च प्रेरणाएं के ज़ोरदार हिलौरे देने का चश्मा थे। मेरे लिए तो वह सदा सदा के लिए गुरू निकटता, भक्ति और समाज सेवा के प्रति रहनुमाई देने वाले थे। उनके सादा, पाक महान जीवन मेरे लिए मेरी श्रद्धा, कृतज्ञता और सात्विकता की खुराक का सदैव भंडार बन गए। मेरे लिए तो वह Thing of beauty, Joy forever हैं। मुझे लगता है कि यदि उनकी महान हस्ती न होती, या मुझे उसका पता न लगता, तो शायद मैं देव समाज में ही न आ पाता, और यदि किसी प्रकार भी आ जाता, तो मैं समाज में टिक न पाता। आज जीवन की पूरी शाम पर पहुँच कर, गुरू दर के साथ जुड़े रहकर, जो मुझे अपने जीवन पर हुई रूहानी उच्च बरकतों की बारिश हुई महसूस हो रही है, उसका बड़ा श्रेय श्रद्धेय श्रीमान जी की मुझे मिली शरण प्राप्ति को ही जाता है।

ऐसे उच्च, अति महान जीवनों को और उनकी संगत प्रदान करने वाले गुरू महाराज का यह कितना बड़ा और कितना महान उपकार है।

उन फरिश्ता हस्तियों के बराबर की दूसरी अति आकर्षक हस्ती श्रद्धेय कनल जी की थी। उनके अति प्रभावशाली व्यक्तित्व ने भी मुझे गुरू मिशन में आने और अपना सच्चा भला करने के लिए सदा ही अति जोरदार प्रेरणा दी। समाज में आकर श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी और श्रद्धेय श्री कनल जी को कुछ निकटता से जानकर वा पहचान कर मेरी अपनी उस सोच विचार पर, अपने confusion जिसमें समाज

में आने से पहले कई वर्ष पहले उधेड़ बुन बनी रही कि समाज में जाना चाहिए या और सोचने की आवश्यकता है आदि पर बहुत फटकार पड़ती रही कि मैं कितना अन्धा और अंहकारी हूं, मैं क्या चीज़ हूं? मै किस चीज़ की मूली हूं? जिस समाज में उक्त देवता हस्तियां विराजमान हों, वहां हितों की गंगा में छलांग मारने के लिए किसी सोच विचार की आवश्यकता ही क्यों पड़ी।

श्रद्धेय कनल जी को भी गुरू महाराज जी की वर्षों तक महा दुर्लभ शरण ने ऐसा रोशन रूप दे दिया कि वह श्रद्धा भरे हृदयों के लिए सदा सात्विकता का स्त्रोत सिद्ध होता रहेगा। सारे सिन्ध प्रान्त के पहले दो M.A., L.L.B व्यक्तियों में से एक मुबारक हस्ती आप थे ओर दूसरे जैराम दास दौलत थे। आपको गुरू महाराज के अद्भुत नूर और तेज ने आकर्षित कर लिया, दूसरे समय के साथ राजनीति में चले गए और भारत की पहली सरकार की कैबिनट के मन्त्री बनें। कनल जी का शाही व्यक्तित्व, उनका त्याग, उच्च शिक्षा, सात्विकता के साथ भरपूर हृदय, उनकी सभाएं, लैक्चर, उनके लेख, उनकी बोल बाणी और व्यवहार सब सात्विकता के चश्में की धाराएं थी। उनको निहारने वाला हृदय सात्विक प्रेरणाओं की ओर से कभी प्यासा नहीं रह सकता। ऐसे फरिश्तों के व्यक्तित्व की वर्तमानता ही इस पृथ्वी को खुशनुमा बना देती थी। वह सब अजब रूहानी वातावरण की उपज़ थे। इस वातावरण की संगत में वास किस्मत वालों के भागों को निर्मित करता है।

बलदेव सिंह

सराहना या खुशामद?

सिक्के की तरह सराहना के भी दो पहलू होते हैं। एक वह जो सराहता है। दूसरा वह जिसे सराहा जाता है। पहले सराहना करने वाले के बारे में विचार करते हैं। आभार, प्रशंसा, अनुमोदन या सराहना का कोई भूमिका नहीं होती। यह मूक आभार किसी नवजात शिशु द्वारा उन हाथों के प्रति प्रदर्शित किया जाता है, जो उसे अपने कलेजे से सटाकर रखते हैं। अक्सर ये हाथ मां के होते हैं। आभार का इससे सच्चा स्वरूप कोई दूसरा नहीं है। सराहना के लिए एक शब्द का इस्तेमाल किया जाता है: शाबाश। इसमें प्रशंसा के साथ ही प्रोत्साहन का भी भाव होता है। जब हम अभिनव बिंद्रा या विजेंदर सिंह, सचिन तेंदुलकर या साइना नेहवाल को शाबाशी देते हैं तो हम उनके खेल की सराहना करने के साथ ही उनकी हौसला अफजाई भी करते हैं। जब यही सराहना बड़े-बुजुर्गों द्वारा की जाती है तो उसे आशीष या मंगल कामना कहा जाता है। बुजुर्गों की सराहना में प्रशंसा के साथ ही प्रार्थना का भी भाव होता है। प्रार्थना यह कि हम इसी तरह यश प्राप्त करते रहें। सराहना का एक और रूप वह है, जिसमें अनुमोदन होता है। जैसे: 'बहुत खूब, लगे रहो'। इसमें श्रेय देने का भाव होता है। इस सराहना में हमारी उपलब्धियों के लिए हमारी पीठ थपथपाई जाती है। लेकिन कुछ लोग इस तरह सराहना करते हैं, जैसे उसके एवज में उन्हें भी कुछ चाहिए।

इशारों की दुनियां में शब्दों की कोई जरूरत नहीं होती, जैसे तालियां बजाना। आम तौर पर किसी व्यक्ति को सराहने के लिए तालियां बजाई जाती है। लेकिन तालियों में कुछ-कुछ 'आरोहण' जैसी बात होती है। जैसे कोई चीज हमें ऊपर उठा रही हो। यह ऐसा ही है, जैसे सराहना के 'सा' को मंद्रसप्तक से

तारसप्तक में पहुंचा दिया गया हो। विनम्रतापूर्वक आभार जताने के लिए हम धीमे-से तालियों बजाते हैं। सराहना में तालियों का स्वर थोड़ा ऊपर उठ जाता है। जबकि प्रशंसा में बजाई गई जोरदार तालियां वे होती हैं, जिनसे सभागार गूंजने लगता है। लेकिन शायद तालियों के माध्यम से सराहना की सबसे सशक्त अभिव्यक्ति वह होती है, जब तालियां दिमाग से नहीं, दिल से बजाई जाती हैं। सराहना में जब भावना शामिल हो जाती है, तब तालियां थमना नहीं चाहती। वे खुशी के मौके को हाथ से जाने नहीं देना चाहतीं। तालियां देर तक बजती हैं और अपने उल्लास को दूर तक पहुंचा देती हैं। प्रशंसा के इस स्वरूप में थोड़ा निस्वार्थ भाव भी है। यह ऐसी प्रशंसा है, जो फुहारों की तरह पूरे हृदय से अपने अनुग्रह को व्यक्त करती है। इस प्रशंसा का कारण कुछ भी हो सकता है: कोई ऐसा गीत, जो दिल को छू गया हो। किसी बल्लेबाज द्वारा खेली गई कोई महान पारी या किसी एथलीट द्वारा किया गया शानदार प्रदर्शन। या नेक इरादों के साथ किया गया कोई काम, जिसके प्रति हमारे मन में सराहना फूट पड़ी हो। मैंने करतल ध्वनि के साथ की गई इस तरह की सराहना देखी हैं। जब बांग्लादेश के पितृपुरूष शेख मुजीबुर्रहमान कैद से छूटकर दिल्ली पहुंचे और जब नेल्सन मंडेला बेड़ियों से मुक्त हुए, तब उनका स्वागत इसी तरह किया गया था। मैं कल्पना कर सकता हूं, नजरबंदी से मुक्त होने के बाद स्वतंत्रतापूर्वक अपने देश को यात्रा कर रही आंग सान सू ची का भी इसी तरह स्वागत किया जाता होगा, क्योंकि म्यामार के लोग उन्हें प्यार करते हैं।

इन सभी में सराहना करने वाले और सराहे जाने वाले समान हैं। दोनों एक दूसरे के परिपूरक हैं। लेकिन सराहना का एक प्याह पहलू भी है। मैं इसे मनुष्य के स्वभाव की चालाकी ही कह सकता हूं, जिसके कारण सराहना अभिव्यक्ति के स्थान पर एक उपकरण बनकर रह गई है। सही अनुपात में की हाने वाली सराहना वह है, जो किसी व्यक्ति की उपलब्धियों के अनुरूप होती है। लेकिन जब गुणगान के गणित के तरत अतिशयोक्ति के साथ सराहना की जाती है तो उसका स्वरूप विकृत हो जाता है। खुशामद के मकसद से की जाने वाली सराहना एक रोग की तरह होती है। यह संक्रामक रोग है। अतिश्योक्तियां बढ़ती जाती है, अंकगणित की गति से नहीं, बल्कि बीजगणित की चाल से।

लेकिन यह कोई नई बात नहीं। खुशामद या चाटुकारिता के मकसद से की जाने वाली सराहना उतनी ही पुरानी है, जितना कि हमारा महाकाव्यात्मक साहित्य। सराहना है 'प्रशंसा'। खुशामद है 'प्रशस्ति'। हमें आजकल के उन लोगों को दोषी नहीं ठहराना चाहिए, जिन्होंने सराहना की स्वाभाविक कला को खुशामद के विज्ञान का रूप दे दिया है। वास्तव में वे एक लंबी और स्थापित परंपरा का अनुसरण कर रहे हैं। फर्क केवल इतना है कि उसमें उन्होंने कुछ और नई चीजें जोड़ दी हैं। लेकिन उन्हें दोषी नहीं ठहराने का यह मतलब नही कि हमें उनका अनुसरण करना चाहिए। खुशामद के भी दो पहलू होते हैं। एक वह जो खुशामद करता है, दूसरा वह जिसकी खुशामद की जाती है।

संस्कृत में खुशामद के लिए एक शब्द है: मुखस्तुति। यह एक शब्द ही सारी कहानी बयां कर देता है। किसी व्यक्ति के सामने उसकी प्रशंसा करने का अर्थ है मुखस्तुति। यह किसी व्यक्ति के पीछे उसकी निंदा करने जितना ही बुरा है। सराहना की ही तरह खुशामद के भी कई प्रकार होते है। वार्षिक कार्यक्रम उत्सव का अवसर होते है, लेकिन वे खुशामद का मंच बनकर रह गए हैं। इतना ही नहीं, इस तरह

के आयोजनों में खुशामद की होड़ भी लग जाती है। यदि कोई कहता है कि यह एक महान व्यक्ति की जयंती है, तो दूसरा कहता है यह महानतम व्यक्ति का जन्म दिवस है। हम फैलाव और स्फीति के युग में जी रहे हैं। गद्य फैलकर लफ्फाजी बन जाता है। कविता फैलकर महाकाव्य बन जाती है। नाटक फैलकर अतिनाटक बन जाता है। जब मुखस्तुति का क्रम साल - दर - साल जाती रहता है तो जिनकी स्तुति की जा रही है, वे भी अंतत: यह महसूस करने लगते है कि वे वास्तव में विशिष्ट है। लेकिन जो व्यक्ति प्रबुद्ध हैं, वे खुशामद करने वालों को टोक देते हैं। वे कहते हैं: 'ठहरो, मुझे या अपने आपको भुलावे में न रखो। यदि मैं अच्छा काम कर रहा हूं, तो मुझे प्रोत्साहित करो, लेकिन मेरी खुशामद मत करो।' लेकिन खुशामद की आदत बदस्तूर जारी रहती है।

जिन लोगों की खुशामद की जाती है, उनसे मैं एक बात कहना चाहूंगा। शायद उन्हें इस पर विश्वास न हो, लेकिन खुशामद वास्तव में घृणा का एक स्वरूप है। आपकी खुशामद करने वाला व्यक्ति वह है, जो आपसे डरता है या आपसे ईर्ष्या करता है। शायद वह आपसे इतना पीछे है कि वह खुशामद की हवा पर सवार होकर आप तक पहुंचना चाहता है। लेकिन खुशामद के खतरों के प्रति सजग होने के बावजूद हमें वास्तविक सराहना जारी रखनी चाहिए। ईमानदारी से की गई सराहना तोहफों की तरह होती है। तोहफों को सहेजकर नहीं रखा जाता। न ही उन्हें व्यर्थ जाने दिया जाता है। उन्हें सही अवसर पर सहजता और ईमानदारी के साथ उपयुक्त व्यक्ति को दिया जाता है। तोहफे कभी भी पात्रता से कम या ज्यादा नहीं होते।

देवात्मा के फरमान (2)

देवात्मा की देव वाणी या समय समय पर उनके फरमान हमारा पथ प्रर्दशन करते हैं: -

1) "जिस सोसाईटी में अधिकांश लोग ऐसे मौजूद हों कि जो असत्य और पाप का पक्ष समर्थन करने के लिए उत्साह पूर्वक तैयार रहते हों, उसमें शामिल रहना अत्यन्त अनुचित और निहायत बेइज्जती की बात है।"

2) "हमारी समाज किसी मत की ख़ातिर नहीं बल्कि उच्च जीवन को लेकर है।"

3) "असल धर्म जो कुछ खराब है, उसे ठीक करने में है।"

4) "खराबी और कभी को दूर करने में अपनी शक्तियों को लगाने से जीवन बनता है और उसके साथ मेल करने या उसको दूर करने के लिए कोई हरक़त न करने से जीवन का नाश होता है।"

5) "जो सोसाईटी कई प्रकार के अपराधों को या ऐसा करने के लिए हौंसला देती है, वह सोसाईटी धार्मिक सोसाईटी नहीं हो सकती, न ही वह सोसाईटी जिसको लक्ष्य दुनियावी सुख सम्मान, दान या धन दौलत हासिल करना हो, वह धार्मिक सोसाइटी नहीं कहला सकती। धार्मिक सोसाइटी वहीं है जो धर्म की ख़ातिर दुनियावी चीजों को छोड़ सके। जो शख़्स किसी और शख़्त को दूसरों पर इज्ज़ाम घड़ने और उन्हें बदनाम करने के लिए तैयार करता हो, वह कैसा काम करता है?

6) "हमेशा यह ख़्याल रहे कि कहीं धर्म से बढ़कर कोई और चीज अधिकार लाभ न करे। धर्म लाभ मुख्य है और सब कुछ गौण है।"

कल्याण सत्संग

17 - 2 - 2017 से 20 - 2 - 2017

पिछले कई वर्षों की तरह इस वर्ष भी देव समाज के ऐतिहासिक स्थान कल्याण में चार दिनों का विशेष सत्संग रखा गया। इससे लाभ उठाने के लिए लखनऊ, यमुना - नगर, चन्डीगढ़, दड़वा, पदमपुर, गंगानगर, गजसिंह पुरा, मल्लेका, केसूपुर, गोनियाणा, भटिंडा, कांगड़ा से धर्म सम्बन्दी और यात्री पहुँचे। लोकल धर्म सम्बन्धियों ने साधन मन्दिर की सफाई, यात्रियों के ठहरने और खाने पीने का प्रबन्ध बड़ी उत्तमता के साथ किया। सभा करवाने के लिए श्रीमान बलदेव सिंह जी, श्रीमान बलबहादुर सिंह जी पहुँचे। उनके साथ जगदीष जी और कुछ और धर्म सम्बन्धी चण्डीगढ़ से पहुँच गए थे। श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने सभा करवाने वा प्रबन्ध में भी पूरा योगदान पाया।

17 - 2 - 2017 पहली सभा, रात 8:30 बजे: सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। "हमारे पूजनीय सत्गुरू" नामक भजन के बाद सभापति जी ने बताया कि नीच अनुराग मनुष्य को दुखों में फंसाते हैं। इनके द्वारा उपजे दुखों का हृदय स्पर्षीय भावों से वर्णन किया। बताया कि परम पूजनीय भगवान देवात्मा अधिकारी मनुष्यों को उनके भयानक सुख अनुरागों से मुक्त करके उनको, घोर दुखों और बर्बादी से बचाते हैं। स्वामी गोबिन्द रामा जी, श्रीमान जुल्ली राम जी के दृष्टांतों द्वारा उपरोक्त सचाई को रोशन किया। श्रीमान बलदेव सिंह जी ने उक्त विषय पर और रोशनी डाली। अच्छा प्रभावशाली मण्डल बना। अगले दिन का प्रोग्राम बताया गया।

18 - 2 - 2017 सुबह 9 बजे:- सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी। सभापति जी ने ब्यान करते हुए फरमाया कि देव समाज वैज्ञानिक युग में अस्तित्व में आई, इसलिए यह सच्ची धर्म समाज है, इसकी शिक्षा ओर कारज सब धर्मो से भिन्न है। बताया गया कि सांईस क्या होती है? बताया कि मनुष्य की हस्ती को बनाने वा बिगाड़ने के लिए दो बातें जिम्मेवार हैं। उसके जीनज़ अर्थात विरासत वा वातावरण देव समाज एक अद्वितीय वातावरण प्रदान करती है। वातावरण विशेष प्रकार के प्रभावों से बनता है। सत्गुरू ने समाज स्थापन करके ऐसा प्रभावदायक वातावरण पैदा किया है, उसकी शक्तिशाली लहरें, सम्बन्धित अधिकारी वजूदों को बदलने की समर्थ्य रखती हैं। देव समाज के वातावरण में रहकर अधिकारी मनुष्यों का ध्यान अपनी तरफ जाता है। अपने हानि लाभ की ओर जाता है, जो बाहर के वातावरण में नहीं जाता। नीच जीवन मिटाने और उच्च जीवन को पैदा करने का काम केवल मात्र यही वातावरण करता है। आक्सीजन गैस की तरह इस वातावरण की प्रत्येक मनुष्य को आवश्यकता है। जो भी इस वातावरण के बिना गुज़ारा करता है, वह लाज़मी तौर पर कई पक्षों में हानि प्राप्त करता है। इस विशेष वातावरण की कीमत को जानने और उससे लाभ उठाने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया गया। बहुत से हाजरीन ने प्रश्न उत्तर करके अपना योगदान डाला। यह सभा काफी रोचक थी।

3.00 बजे दुपहिर: सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। एक सुन्दर भजन के बाद सभापति जी ने देव समाज के महान लक्ष्य बारे ब्यान किया। देव समाज के चारों महा लक्ष्यों का ब्यान किया। पहला लक्ष्य मिथ्या विश्वासों से मुक्ति दिलाने की, मिथ्या विश्वासों के भयानक रूप ओर हानियों को ठोस उदाहरणों द्वारा बताते हुए मिथ्या के विनाशकारी जाल से मानवता

को बचाने के उच्च लक्ष्य को समझाया। दूसरा लक्ष्य नीच जीवन या पापाचार से मुक्ति देने को बताया। दूसरा लक्ष्य नीच जीवन या पापाचार से मुक्ति देने का बताया। नीच जीवन की भयानकता, नर्क और दुखों का वर्णन किया। देव समाज के पापाचार से मुक्ति देने का लक्ष्य बताया। तीसरा लक्ष्य मानव हृदयों में जो नीच अनुरागों को दिखाना जो ठाठें मारते हैं, जिसको मनुष्य देख नहीं सकते। उन नीच अनुरागों को दिखाने का लक्ष्य है। उनकी भयानकता को समझाया गया। बताया कि इन नीच अनुरागों से मानव हृदयों को मुक्त किया है। यह तीसरा लक्ष्य है। चौथा लक्ष्य उच्च जीवन, उच्च भावों का विकास करना है।

रात 7.30 बजे: सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। मनुष्य को तीन चीजों का ज्ञान होना आवश्यक है। नेचर क्या है? मैं कौन हूँ? नेचर के नियम क्या है? खेती के, ईलाज के, विद्या प्राप्ति के अलग अलग नियमों को समझाया। नेचर की विशालता और उसके अटल नियमों को सरल से सरल ढंग से समझाया। नेचर के नियमों से लापरवाही या अज्ञान के हानिकारक परिणामों को बताया गया। नेचर के नियमों को कोई बदल नहीं सकता। उच्च जीवन के भी विशेष नियम हैं, उनको जानने और पालन करने की आवश्यकता है। थोड़े समय के लिए श्रीमान बलदेव सिंह जी ने उच्च जीवन के कई नियमों का वर्णन किया। उच्च जीवन के नियम बताए। विशेष सात्विक भावों, श्रद्धा, कृतज्ञता, शुक्रगुज़ारी, हानि परिशोध, परोपकार के भावों की आवश्यकता बताई।

19.2.2017, सुबह 9.15 बजे, सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी :- दो भजनों के गान के बाद सभापति जी ने बताया कि साधारणत: मनुष्य की अवस्था यह है कि जो नई बात बताता है, वह उसको ठीक नहीं समझता और उसका विरोध करता है। सती जैसी घृणित रस्म को बन्द करने वालों का भी विरोध हुआ। गुलामी को ख़त्म करने वालों का भी विरोध हुआ।

नई सड़कें बनाने का भी विरोध हुआ है। देव समाज ने बिल्कुल नई और अति हितकर बात बताई हैं, पुराने जमे हुए विश्वासों के कारण, समाज का भी बहुत विरोध हुआ है। कोई मनुष्य दुख नहीं चाहता, सुख चाहता है। देव समाज बताती है कि किसी किस्म का पाठ, जाप, सिमरण, कीर्तन, स्नान आदि क्रियाएं दुखों से मुक्त नहीं कर सकती। दुख क्यों होते हैं? इसका कारण कोई देवी देवता या गायबी शक्ति नहीं। दुखों का कारण उनसे विमुखता भी नहीं। दुखों का कारण मुख्य तौर पर हमारे अन्दर की सुख लालसाओं की प्रबलता है। श्री सभापति जी ने अपने जिगरी दोस्त के विषय में बताया कि उच्च धर्म सम्बन्धी ने बताया कि वह तो अपना दोस्त नहीं, तुम्हारा दोस्त कैसे ही गया। सधारणत: मनुष्य अपना भी दोस्त नहीं, सबसे बड़ा दुश्मन उसका अपना आप ही है। सुख लालसाएं मनुष्य को विलक्षण योग्यताएं रखने के बावजूद यह देखने नहीं देती कि उसकी भलाई और तबाही किस में है। इन्होंने मनुष्य को पागल होने के लिए मजबूर कर रखा है। जो नशों को प्यारी चीज़ समझता है, जबकि वह ज़हर हैं, तो पागल ही ऐसा समझ सकता है। मनुष्य अपनी सेहत के लिए भी कई सूरतों में धन नहीं त्याग कर सकता। धन भी एक मीठा ज़हर है, धन इकट्ठा करते ही अनेकों जन मर जाते हैं, उससे लाभ नहीं उठा सकते। Tigerwood की उदाहरण द्वारा समझाया कि किस प्रकार एक 2 नीच अनुराग मुर्दा विरान करता है। यह वातावरण अपने शत्रु भावों को दिखाता है।

दुपहिर 3.00 बजे, सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी:- श्री बीरबल जी ने बहुत सुन्दर

भजन गाया, "मेरी यह तुच्छ सी हस्ती किसी के काम आ जावे।" फिर सभापति जी ने बताया कि हम जो भी बोलते हैं, सोचते हैं, या करते हैं, वह हमारे भाव ही कराते हैं। जिस अस्तित्व के द्वारा हमारे भावों की तृप्ति नहीं होती, तो हमारे भीतर घृणा पैदा होती है। उस इन्सान का मनुष्य मुंह देखना पसंद नहीं करता, उसके विषय में अच्छा सोच नहीं सकता, उसके विषय में बुरा सुनना अच्छा लगता है। उसमें तृप्ति मिलती है। घृणा हमारी सुख लालसाओं को पूरा न करने वाले के प्रति होती है। जो पूरा नहीं करता वह दोषी लगने लगता है। नीच घृणा की अवस्था बहुत भयानक होती है। यह मनुष्य की सब अच्छाईयों की भी जला देती है। संसार में नीच घृणा द्वारा जो नर्क पैदा होता है उसकी उदाहरणें पेश की गई। किस प्रकार नीच घृणा आत्मघात तक करने को विवश करती है। कमज़ोरों पर ज़ुल्म करवा देती है। छोटे बच्चे द्वारा नोटों की गड्डी तन्दूर में फैंक देने से पिता की नीच घृणा भड़की कि उसने बच्चे को ही तन्दूर में फैंक दिया। नीच घृणा, माता पिता, बहन भाई, पति पत्नी, निकटी से निकटी सम्बन्धों में भी महा अनर्थ करवा देती है।

श्रीमान बलदेव सिंह जी ने भी इस विषय में हृदय स्पर्शीय घटनाएं बताई। बहुत प्रभाव दायक मण्डल बना।

रात 7.30 बजे सभापति श्री मान बलबहादुर सिंह जी:- "धर्म पाए बिना जीना, जन्म अपना है खोना", नामक भजन के गान के बाद सभापति जी ने बताया कि धर्म उच्च भावों का नाम है, जो भाव दूसरों पर केंन्द्रित होते हैं, वह उच्च भाव होते हैं। हमदर्दी के भाव का विश्लेषण किया। कई परोपकारियों की घटनाएं बताई। फिर शुक्रगुज़ारी के भाव की कुछ घटनाएं बताई। श्रीमान बलदेव सिंह जी ने भी विशुद्ध परोपकार की कुछ घटनाएं बताई। ऐसे परोपकारियों को बार बार नमन किया। अगले दिन की विशेष सभा में आने की प्रार्थना की।

सुबह 9.15 पर सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी:- पहले भजन का गान, गुरू महाराज का सुन्दर फूलों द्वारा अर्चन, देव स्तोत्र का गान वा व्याख़्या की गई। फिर सभापति जी ने आर्शीवाद प्रार्थना की। फिर "श्रद्धा भाजन माता - पिता जी, श्रद्धा भाव करूं उपहार" नामक भजन का गान किया गया।

सभापति जी ने फरमाया कि कुछ हस्तियां युग परिवर्तन कर देती हैं। किस प्रकार राजा राम - मोहन राय ने सती की प्रथा दूर करके इब्राहिम लिंकन ने गुलामी को ख़त्म करके, गांधी जी ने अहिंसा द्वारा आज़ादी पाने का संग्राम करके युग परिवर्तन कर दिया। अनेक तहरीकें नेचर के विकास क्रम ने पैदा की हैं। इसी नेचर के विकास क्रम ने परम पूजनीय भगवान देवात्मा का आर्विभाव हुआ है, जिन्होंने मानवता को पाप और मिथ्या से निकालने का बीड़ा उठाया। सम्बन्धों की सच्ची पहचान और उन्हें कैसे जीना है, इसके लिए एक अलौकिक वातावरण पैदा किया है। Kill when you can, take what you can. सत्गुरू ने इस जंगल राज को खत्म किया है, जो घर घर में व्याप्त है। इन्सान को सम्बन्धों में जीना नही आया। गुरू महाराज ने फरमाया है कि " मैं इस पृथ्वी पर स्वर्ग लाना चाहता हूं" गुरू महाराज ने रास्ते में आती हुई माता के चरणों में लेट कर प्रणाम किया। अपने पिता से दुशाला लेन से सन्मान पूर्वक इन्कार कर दिया। गुरू महाराज का सम्बन्ध सब सम्बन्धों में आदर्श जीवन रहा है। कंवर दवेन्द्र सिंह जी की अपने पिता के प्रति श्रद्धा भाव का ब्यान किया। सभापति जी ने अपने, अपनी माता के सम्बन्ध में अपने परिवर्तन का ज़िकर किया। माता पिता की विरासत का धन्यवाद किया। बिमरियों में माता पिता अपना फिकर

छोड़कर बच्चे के लिए दिन रात सब कुछ कुर्बान कर देते हैं। माताएं मजदूरी करके भी बच्चों को पालती हैं। श्रीमान करम सिंह जी ने माता को एक बार कमली (पागल) कहा था, उसका उन्होंने रो रोकर परिशोध किया। पिता की मौत पर अपने बुरे इज़हार के लिए तड़पते रहे। एक पाकिस्तान के गायक ने एक गीत गाया हुआ सुनाया गया, उसने सब को भावुक कर दिया। दूसरा वीडियो वृद्ध आश्रम के वातावरण को बच्चों की कृतघ्नता के रूप में दिखाया गया।

माता पिता कभी बच्चों का बुरा नहीं सोच सकते। परन्तु बच्चों का सम्बन्ध स्वार्थ को लेकर होता है। माता पिता के साथ उच्च भावों, श्रद्धा, कृतज्ञता और सेवा के भावों से जुड़ना चाहिए। माता पिता तंगी में से गुज़र कर भी बच्चों की जायज़ और नज़ायज़ मांगे पूरी करते हैं। एक सेवक पुकार पुकार कर कहा करते थे कि यदि स्वर्ग देखना है, तो मेरे घर में देखो, जो गुरू की कृपा से आया है।

भाव प्रकाश

सुखादेव सिंह जी गोनियाना मण्डी: - सभाओं में अपनी कमियां नज़र आई हैं। रोते हुए बताया कि मैं अपने माता - पिता को गल्त बोल जाता हूं। अब मैं पूरा यत्न करूंगा कि आगे से ऐसा कभी नहीं बोलूंगा। (वह घर में अपने माता - पिता का अर्चन करने के लिए 2 हार लेकर गए) कि हार डालकर उनके चरणों में प्रणाम करूंगा।

श्रीमान बलबहादुर सिंह जी : - जिन माता - पिता को बुरा देखता था कि वह अनपढ़, असभ्य, पिछड़े हुए हैं, कम समझदार लगते थे। गुरू महाराज के अमूल्य प्रभावों ने उन्हें तीर्थ की चीज़ बना दिया। उनका ऊंचा और महान रूप मुझे दिखा दिया। मुझे वह फरिश्ते दिखने लगे। उनके पैरों में गिरकर उच्च सुख वा रस मिलता था। पूजा की चीज़ नज़र आते थे। अपनी गुस्ताख़ियां नज़र आती हैं, पछतावा होता है, जितना उनके लिए करना चाहिए था, नहीं किया। मेरी पत्नी ने मेरा बहुत साथ दिया। वह बच्चों की गुस्ताखियां सहकर भी क्षमा कर देती हैं, जो मुझसे नहीं होता।

श्रीमान जगदीष जी चण्डीगढ़ : - सभाओं में माता पिता के उपकारों की लड़ियों की लड़ियां सामने आई हैं। मैं छोटा बच्चा था, मेरे कान बहुत खराब हो गए थे। पीप बहती थी। डाक्टरों के ईलाज से भी कोई लाभ नहीं हो रहा था। पिता जी ने सारा काम काज छोड़ दिया, कारखाना भी छोड़ दिया, मुझे उदयपुर, चण्डीगढ़ पी.जी.आई बड़े डाक्टरों के पास लेकर कोई लाभ न हुआ, कई डाक्टरों ने निराश भी किया, पर पिता जी ने हिम्मत नहीं छोड़ी। कई और डाक्टरों के पास गए, महीनों फैक्टरी बन्द रही, आख़िर पिता जी मुझे बीकानेर ले गए। पिता जी के अनथक संग्राम से आख़िर मेरे कान ठीक हो गए। 1971 में पिता जी परलोक चले गए। मैंने पिता जी के उपकारों की कोई कदर नहीं की। जो सेवा करनी चाहिए थी, नहीं की। कोई समझ ही नहीं थी। अब माता - पिता की सुन्दर फोटो रखी हुई हैं, उनको रोज़ प्रणाम करता हूं। पिता जी से रो रोकर क्षमा मांगता हूं और उनके आशीर्वाद की प्रार्थना करता हूं।

श्रीमान वी.पी. सिंह जी गंगानगर (आफीसर फोन विभाग) : - मेरी माता जी परलोक चली गई हैं, अब से सुबह उठकर उन्हें प्रतिदिन प्रणाम किया करूंगा। मैं सन 1981 में घर से दूर ट्रेनिंग ले रहा था। जुलाई के महीने बहुत बड़ा तुफान और झक्खड़ आया, वर्षा आई। डाक, तार, टैलीफोन सब कुछ तहस नहस कुछ

Published on 5th of the month
20
Regd. Postal No.CHD (0077) 2015-17
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

दिनों के लिए हो गया। मेरे माता पिता को बहुत फ़िकर हो गया। आख़िर दुखी होकर मेरा पता लेने मेरी ओर चल पड़ी। कई दिन कुछ ढंग से खाया, पीया नहीं, यह सोचकर कि हमारा बच्चा पता नहीं है भी कि नहीं। जब इतने खराब हालात में वह दुखी होकर मेरे पास पहुँचे, तो मैं आगे से बुरा बोलने लग गया कि मुझे क्या होना था, मैं तो ठीक हूँ, फजूल फिकर करते फिरते हो, बुरा मनाता रहा, धन्यवाद की जगह ऊटपटांग बोलता रहा। उन्होंने तो मेरे फिकर में रोटी नहीं खाई। सभा में माता पिता का रूप नज़र आया है, अपने ऊपर फटकार पड़ती रही है। (उनका दिल भरा हुआ था) माता पिता को महान और उपकारी रूप का एहसास हो रहा है।

श्रीमान दीवान जी प्रिंसीपल गंगानगर : इस दर पर आकर बेहद भला हुआ है। सच्ची राहत महसूस हुई है। सच्चा ठिकाना मिलता महसूस हो रहा है। मैं बता नहीं सकता, गूंगे की तरह क्या क्या मिल गया है। 42 वर्ष ज़िन्दगी के मैंने बर्बाद कर दिए। गीता का पाठ करता रहा, राधा स्वामी डेरे में जाकर रहा। यहां आकर नई होश मिली है। मैं सचाई की खोज में भटकता फिरता रहा। पिछले साल सर्दी बहुत ज़ोरदार थी, इसलिए मैं किसी सत्संग में न जा सका। यहां जो भला होता है, जो कुछ दिखाई देता है, जो होश आती है, वह और किसी स्थान पर नहीं आती। मैंने बच्चों को आख़िरी वसीयत और अपना आख़िरी हुक्म वा आदेश दे दिया है कि सारी दुनियां देखने के बाद यहां आकर बिल्कुल नई चीज़ मिली है, जिसके बिना किसी का गुज़ारा नहीं, इसको नहीं भूलना, इसके साथ सदा सदा जुड़े रहना।

पिछले वर्ष मैं सत्संग में आ रहा था, मैंने एक कंबल अपने थैले में डालकर ले जाना था। मैंने पत्नी से झोला मांगा। उसे ढूंडने पर भी न मिला। मैं सारे ज्ञान ध्यान भूल गया। मैं गीता भूल गया, राधा स्वामी होना भूल गया, देव समाज को भी बिल्कुल भूल गया। मैंने कोहराम मचा दिया। सारा घर सिर पर उठा लिया। घृणा से भर गया, केवल एक थैले के न मिलने से, धर्म पत्नी को उजड्ड, गंवार, पता नहीं क्या कुछ बोला। बहुत नीच और गन्दा वजूद बनकर बहुत घृणित, कटू, अश्लील शब्द बोलता रहा। पत्नी को बहुत बुरा, घृणित और बहुत अपमान जनक व्यवहार दिया। यहां आकर पता लगता है कि मैं क्या बन जाता हूं। ऐसे स्लूक देता हूँ। अब अपनी ग़ल्ती का एहसास हुआ है। यहां से शक्ति मिली कि जाकर क्षमा मांगी। मेरे स्लूक मेरे आदेश समझने नहीं देते। वह अपने मार्ग से मोड़ने पर भी नहीं मुड़ता। मेरा व्यवहार यहां आकर दुखी

शेष पृष्ठ 2 पर

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts